उच्चतर शिक्षा में सीआईएमपी का योगदान अविस्मरणीय : मुकंदा

विषम परिस्थितियों में युवाओं को स्वर्णिम भविष्य की राह दिखाई

पटना (एसएनबी)। अपने अतीत को ढूंढ़ते जब बिहार शिक्षा की बेहतर संभावनाओं में अपना भविष्य तलाश रहा था वैसे समय में उच्चतर शिक्षा के कई मानदंड तैयार करने को कुछ संस्थान मजबूत आधार रख कर युवाओं के भविष्य सुधारने में लगे थे। ऐस में सीआईएमपी के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। इस संस्थान के उद्देश्य और बिहार की जरूरत को ले कर चन्द्रगुप्त प्रबंध संस्थान पटना के निदेशक डॉ. वी. मुकुंदा दास से राष्ट्रीय सहारा से हुई बातचीत के कुछ प्रमुख अंश ....

सीआईएमपी की स्थापना के सफलतापूर्वक 13 वर्ष पूरे होने पर आपके क्या विचार हैं?

अविश्वसनीय! सच कहूं तो ऐसा प्रतीत होता है कि कल ही मैं पहली बार बिहार आया हूं और निदेशक के रूप में सीआईएमपी की बागडोर संभाली।

संस्थान की स्थापना और उसका संचालन कितना कठिन रहा?

सच पूछें तो यह बहुत ही कठिन रहा। मुझे बहुत सारी कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। एक साथ कई-कई भूमिकाएं अदा करनी पड़ी और संस्थान को इस स्तर पर लाने के लिए सैकड़ों रातों की नींद हराम करनी पड़ी। लेकिन आज जब मैं वापस पीछे मुड़कर देखता हूं तो मुझे बेहद राहत एवं संतुष्टि का एहसास होता है। बिहार में शिक्षा का क्षेत्र विगत कुछ वर्षों से लगातार किसी न किसी प्रकरण के कारण चर्चा में रहा।

इस तरह का माहौल संस्थान के लिए कितना हितकर होगा?

पहले दिन से ही मैंने सीआईएमपी को स्थानीय माहौल से अछूता रखा है। संस्थान को बाहरी वातावरण से बचा कर रखा। इसका असर भी सकारात्मक हुआ। शुरूआती दौर में जरूर कुछ परेशानी आई। मसलन आंतरिक संकाय के सदस्य के नहीं होने का समाधान ढूंढने में। मुझे विभिन्न पाठ्यक्रमों को पढ़ाने के लिए राज्य के बाहर अन्य प्रतिष्ठित राष्ट्रीय संस्थानों से शिक्षाविदों को लाने के लिए अपने व्यक्तिगत संपर्कों का उपयोग करना पड़ा था। लेकिन जब उन्हें पता चलता कि उन्हें पटना आना है, तो अक्सर लोग कहते हैं- 'पटना'! बिहार!! ओह.. नहीं !! और यहीं से मेरी कोशिश शुरू हुई कि उन्हें बदलते बिहार का भान कैसे करायें। आग्रह करना तो आदत -सी बन गई। परन्तु ऐसा करते यह हर वक्त मैसूस हुआ कि एक बड़े काम के लिए कुछ तो करना

होगा। मगर जल्द ही यह दौर समाप्त हो गया। समय काफी तेजी से बदला और बिहार तेजी से अब ज्ञान प्राप्ति के काल में आ चुका था जहां प्रतिभाएं तेजी से उभरकर पूरी दुनियां को एक नया संदेश दे रहे थे।

बिहार में विश्वविद्यालय एवं अन्य उच्च शिक्षण संस्थान निधि, फेकल्टी और कामकाज में स्वायत्तता की कमी से जूझ रहे हैं। आपका अनुभव कैसा रहा ?

राज्य के मुख्यमंत्री व सीआईएमपी के बोर्ड ऑफ गवर्नर के पदेन अध्यक्ष नीतीश कुमार का काफी आभारी हूं जिनके अनवरत प्रयास , समर्थन एवं मार्गदार्शन से इस संस्थान को वह स्वरूप दे सका जिसकी बिहार को जरूरत थी। सबसे बड़ी बात यह है कि आज तक संस्थान के मामले में किसी भी प्रकार का हस्तक्षेप उनकी तरफ से नहीं किया गया है और न हीं स्वायत्तता की राह में उन्होंने किसी भी प्रकार की कोई बाधा आने दी। हां, यह बात और है कि शुरू-शुरू में जैसा कि मैं बता चुका हूं, मुझे विभिन्न पाठ्यक्रमों को पढ़ाने के लिए राज्य के बाहर अन्य प्रतिष्ठित राष्ट्रीय संस्थानों से शिक्षाविदों को लाने के लिए अपने व्यक्तिगत संपर्कों का उपयोग करना पड़ा। आज हमारे पास किसी भी तरह के फैकल्टी की कमी नहीं है। हमारे पास 18 पूर्णकालिक संकाय सदस्य हैं और सभी देश -विदेश के प्रतिष्ठित संस्थानों यथा भारतीय प्रबंध संस्थान, भारतीय प्रोद्योगिकी संस्थान, लंकाशायर बिजनेस स्कूल (यूके) इत्यादि से डॉक्टरेट हैं।

संस्थान के संचालन में आपको किसी प्रकार की कोई बाधा महसूस होती है क्या ?

मुझे अभी तक मात्र एक ही बाधा महसूस होती है और वो है छात्रों में सांस्कृतिक विविधता। लेकिन चीजें तेजी से बदल रही है प्रत्येक बैच में पिछले बैच की अपेक्षा अधिक सांस्कृतिक विविधता दिख रही है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि अगले कुछ बैचों में हम इस बाधा को भी पार कर लेंगे।

सीआईएमपी की भविष्य की क्या योजनाएं हैं?

सीआईएमपी की एकमात्र परिकल्पना इसे वास्तविक अर्थों में एक ख्याति प्राप्त अंतरराष्ट्रीय संस्थान के रूप में स्थापित कर बिहार के पुराने खोये हुए शैक्षणिक गौरव को वापस लाना है। हम पहले से ही कई अंतरराष्ट्रीय बी-स्कूलों जैसे लंकाशायर बिजनेस स्कूल (यूके) स्टॉकहोम बिजनेस स्कूल (स्वीडन), ईगड बिजनेस स्कूल (मैक्सिको) लेहाई विश्वविद्यालय (अमेरिका) आदि के साथ अंतरराष्ट्रीय सहयोग समझौते पर हस्ताक्षर कर चुके हैं। लेकिन, यह केवल शुरूआत है। अभी कई अन्य अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालयों के साथ सहयोग समझौता होना बाकी है। हमारी योजना मॉरीशस, सूरीनाम और फिजी में एक ऑफ-शोर कैम्पस स्थापित करने की भी है। बहुत जल्द ही हम कार्यरत अधिकारियों एवं व्यवसायिक पेशवरों के लिए प्रबंधन में आंकालिक फेलो प्रोग्राम (चेण्क्ष के समकक्ष) एवम प्रबंधन में सप्ताहांत कार्यक्रम की शुरूआत करने वाले हैं।

आपको आईआरएमए की शैक्षणिक भूमिका को छोड़कर सीआईएमपी में मिश्रित भूमिका में आने के लिए क्या प्रेरक रहा?

संस्था निर्माण में मेरी विशेषज्ञता और अपने महानिर्वाण से पहले आने वाली पीढ़ियों के लिए कुछ कर गुजरने की चाहत हमेशा रही। मैं इरमा का पहला संकाय सदस्य था और मुझे डॉ. वर्गीस कुरियन, जो देश में श्वेत-क्रांति के जनक थे, के दूरदर्शी नेतृत्व में काम करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उस टीम का एक हिस्सा होने के नाते मैंने संस्था निर्माण एवम इसकी शुरूआती समस्याओं को अनुभव किया था। इसके अलावा, मैं आईआईएम-अहमदाबाद, आईआईएम-कोझिकोड और एमडीआई-गुड़गांव के प्रारंभिक वर्षों के दौरान कार्य कर चूका हूं।

क्या आपको कभी भी बिहार में शिफ्ट होने के अपने फैसले पर पछतावा हुआ?

पछतावा नहीं बल्कि अपने निर्णय पर फक्र हुआ कि बिहार आने का निर्णय पूरी तरह सोच-समझ कर लिया था।

Rashtriya Sahara ! Page.No-03 ! Dated:26-03-2021